

भगत त्रिलोचन - सबद ३

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

रागु गूजरी, भगत त्रिलोचन, गुरु ग्रंथ साहिब, ५२६

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

सर्प जोनि वलि वलि अउतरै ॥१॥

अरी बाई गोबिंद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥

अंति कालि जो इसली सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥२॥

अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥३॥

अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥

अंति कालि नाराङ्गु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतम्बरु वा के रिदै बसै ॥५॥२॥

सार: 'अंतिम पल' का अर्थ केवल जीवन का अंतिम क्षण नहीं बल्कि हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ होता है। ऐसे पल में, हमारे निर्णय और सोच हमारी मानसिकता को आकार देते हैं और हमारी आंतरिक सोच को दिखाते हैं। हर निर्णय एक गहन छाप छोड़ता है और हमें स्पष्ट सोच या भ्रम की ओर ले जाता है। बिना सोचे-समझे आने वाले विचार बेचैनी बढ़ा सकते हैं जबकि स्थिर विचार हमें हमारे वास्तविक स्वरूप से जोड़ते हैं। ऐसे निर्णायक क्षण परिवर्तन के अवसर बनते हैं और प्रभावित करते हैं कि हम कौन हैं, क्या बन सकते हैं और हमारे भविष्य का अंततः निर्माण करते हैं।

अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

यदि किसी निर्णायक क्षण में, हम भौतिक सुख-सुविधाओं के विचारों में ही खोए रहें तब हमारी अंतरात्मा उस चिंता के साथ ही समाप्त हो जाती है। यह शारीरिक मौत नहीं बल्कि ऐसी सोच को दिखाता है जहाँ भौतिक चीज़ों का जुनून हमारे आध्यात्मिक विकास का पतन कर सकता है।

सर्प जोनि वलि वलि अउतरै ॥ १॥

बार-बार आने वाले विचारों का चक्र उन्हें साँप की तरह जकड़ सकता है। यह उस ज़हरीली सोच का प्रतीक है जो हमारे इरादों के चारों ओर लिपट जाती है और सच्ची शांति और स्पष्टता पाने की हमारी क्षमता का दम घोट देती है। (१)

अरी बाई गोबिंद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥

हे साथी जीव, उस असीम चेतना पर विचार करना याद रखो जो हमारे चारों ओर उपस्थित है। यह गहन संकेत देता है कि हम अपनी चेतना में किस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसका हमारे अनुभवों पर गहरा असर पड़ता है। (विराम)

अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

किसी भी निर्णय के अंतिम पल में, अगर हम इंद्रियों के सुख-भोग के विचारों में खोए रहें तब हमारी अंतरात्मा उस चिंता के साथ ही खत्म हो जाती है। यह दिखाता है ऐसी सोच जो स्थायी मूल्यों को अपनाने के बजाय बाहरी, क्षणभंगुर अनुभवों में संतुष्टि ढूँढती है।

बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥ २॥

बार-बार आने वाले विचारों का चक्र उन्हें लेन-देन वाले सुखों की स्थिति में फँसा सकता है। यह दर्शाता है वह सोच जो अपनी आंतरिक पूर्णता को अपनाने के बजाय दूसरों पर निर्भर होकर संतुष्टि प्राप्त करना चाहती है। (२)

अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

किसी भी निर्णाय के अंतिम पल में, मन मालिकाना हक्क के अधिकार के विचारों में ही डूबा रहे तब इस चिंता में हमारी अंतरात्मा विलीन हो जाती है। यह दर्शाता है उस बंधन को जो अपनी बनाई चीज़ों से होता है और उन पर कब्ज़ा करना चाहता है जिससे इंसान 'मेरे-पन' की भावना में उलझा रहता है।

सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥३॥

बार-बार आने वाले विचारों का चक्र उन्हें भोग-विलास में फँसा सकता है जैसे कोई सुअर गंदगी में लोटता है। यह उस सोच का प्रतीक है जो मोह-माया और अनियंत्रित इच्छाओं की गंदगी में डूबी होती है। (३)

अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

किसी भी निर्णाय के अंतिम पल में, अगर हम रीति-रिवाजों और धार्मिक ढाँचों में ही उलझे रहें तब इस चिंता में हमारी अंतरात्मा खो जाती है। यह उस सोच को दर्शाता है जो स्पष्टता और एकता के बजाय बनाई हुई पहचान और दोहरेपन को ज़्यादा महत्त्व देती है।

प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥

लगातार आने वाले विचारों का चक्र उन्हें दुनियावी मोह-माया से बँधे भूत जैसे जीवन में फँसा सकता है। यह उन इच्छाओं को न छोड़ पाने की अक्षमता को दिखाता है जो शारीरिक स्वरूप से जुड़ी होती हैं और जिनसे कोई संतुष्टि नहीं मिलती। (४)

अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥

किसी भी निर्णय के अंतिम क्षण में, यदि हम सर्वव्यापी चेतना के सार को आत्मसात कर लेते हैं तब यह सचेत और नैतिकतापूर्ण मानसिकता को दर्शाता है।

बदति तिलोचनु ते नर मुक्ता पीतम्बरु वा के रिदै बसै ॥५॥२॥

त्रिलोचन कहते हैं कि मुक्त व्यक्ति की अंतरात्मा में सार्वभौमिकता का प्रकाश होता है। पीतांबर शब्द स्पष्टता, संतुलन और अविचल उपस्थिति का प्रतीक है जो हमारा मार्गदर्शन एकत्व की ओर करता है। (५)(२)

तत्त्वः भगत त्रिलोचन अत्यंत गहन बात कहते हैं कि हमारी सोच वैसी ही बनती है जैसी चीजों को हम बार-बार महत्व देते हैं जिनसे डरते हैं, जिनसे चिपके रहते हैं और जिन्हें याद करते हैं। जब इच्छा सबसे अहम हो जाती है, तो हम अपनी जागरूकता खो देते हैं और इच्छाओं के कभी न समाप्त होने वाले चक्र में फँस जाते हैं। फिर भी, मनन-चिंतन के अभ्यास से हम अपना सम्मान वापस पा सकते हैं जिससे हम रिश्तों से सार्थक रूप से जुड़ सकते हैं और इच्छाओं के लगातार खिंचाव के बिना दुनिया में पूर्णतः जी सकते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com